वर्ष : 47, अंक : 3 मई-जून 2024

गगनांचल

साहित्य, कला एवं संस्कृति का संगम

प्राचीन और प्रगाढ़ रहे हैं
भारत-रूस संबंध

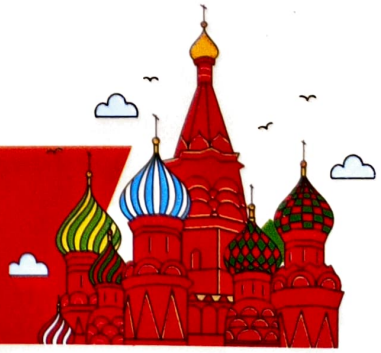

ISSN: 0971-1430

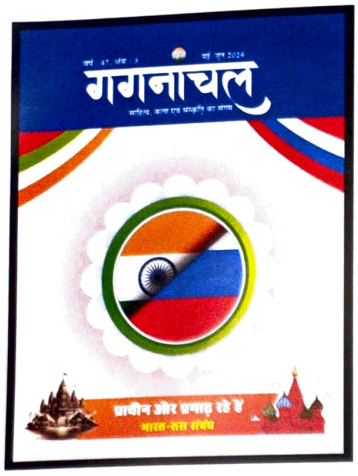

वर्ष : 47, अंक : 3 मई-जून 2024

गगनांचल

साहित्य कला एवं संस्कृति का संगम

अनुक्रम

प्रकाशकीय

5 सांस्कृतिक ऊष्मा से भरपूर रहे हैं भारत-रूस संबंध
कुमार तुहिन

संपादकीय

6 विचारों से परे, भावों से भरा रहा है भारत-रूस का लोक संबंध
रवि शंकर

आवरण कथा

7 और प्रगाढ़ होंगे भारत-रूस संबंध
डेनिस अलीपोव

10 अद्भुत रहा है रूसियों का भारतप्रेम
यूजिनिया वानिना

16 भारत और रूस लोकनय और हिंदी
विमलेश कान्ति वर्मा

21 भारत-रूस संबंधों को मजबूत करने में हिन्दी की भूमिका
प्रगति टिपणिस

30 भारतवर्ष-रूस आर्थिक संबंध : सामर्थ्य और सीमाएँ
डॉ. शैलेन्द्र कुमार

प्रकाशक

कुमार तुहिन
महानिदेशक
भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद

संपादक

रवि शंकर

प्रकाशन सामग्री भेजने का पता

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद
आजाद भवन, इंद्रप्रस्थ एस्टेट,
नई दिल्ली-110002
ईमेल :
spd-hindi@iccr.gov.in
pohindi.iccr@nic.in

गगनांचल अब इंटरनेट पर भी उपलब्ध
http://www.iccr.gov.in/Publication/Gagananchal
पर क्लिक करें।

सदस्यता शुल्क

वार्षिक
₹ 500, यूएस $ 100

त्रैवार्षिक
₹ 1200, यूएस $ 250

उपर्युक्त सदस्यता शुल्क का अग्रिम भुगतान 'भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, नई दिल्ली' को देय बैंक ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा किया जाना श्रेयस्कर है।

मुद्रण : सीता फाईन आर्ट्स प्रा. लि.

गगनांचल में प्रकाशित लेखादि पर प्रकाशक का कॉपीराइट है किंतु पुनर्मुद्रण के लिए आग्रह प्राप्त होने पर अनुमति दी जा सकती है। अतः प्रकाशक की पूर्वानुमति के बिना कोई भी लेखादि पुनर्मुद्रित न किया जाए। गगनांचल में व्यक्त विचार संबद्ध लेखकों के होते हैं और आवश्यक रूप से परिषद की नीति को प्रकट नहीं करते। प्रकाशित चित्रों की मौलिकता आदि तथ्यों की जिम्मेदारी संबंधित प्रेषकों की है, परिषद की नहीं।

गगनांचल
साहित्य, कलाएं एवं संस्कृति का संगम
वर्ष : 47, अंक : 3, मई-जून 2024

अनुक्रम

38 **भारत-रूस संबंधों का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य**
संजय कुमार साह, राधिका बाला

44 **विकसित भारत और रूस में समृद्ध सांस्कृतिक विरासत**
डॉ. रूबल रानी शर्मा

इतिहास के पन्नों से

49 **भारत-प्रेमी द्याकोव**
यशपाल

54 **दो महान जनगण के आत्मिक सामीप्य के ध्वजवाहक**
व. गेओर्गियेव, व. कोप्तेव्स्की
ये. रूम्यान्त्सेव, ग. श्चेर्बाकोव

62 **मैक्सिम गोर्की और भारतीय संस्कृति**
मदनलाल 'मधु'

68 **सोवियत संघ में भारतविद्या संबंधी अनुसंधानों की प्रमुख दिशाएं**
ग. बोंगार्द लेविन , अ. विगासिन

82 **रूसी कविताएं और मैं**
हरिवंश राय बच्चन

स्थाई स्तंभ

88 **कहानी : मार्या मोरेवना**

95 **कविताएं**
लेव ओशानिन
एकातेरिना शेवेलेवा
अलीम केशोकोव

रचनाकारों से अनुरोध

- गगनांचल हेतु भेजे जाने वाले आलेख मौलिक, अप्रकाशित तथा अप्रसारित होने चाहिए। इसकी उद्घोषणा आलेख के प्रारंभ में होनी चाहिए।
- कृपया अपनी रचना यूनीकोड फॉन्ट में ही टाइप कराकर भेजें। रचना यदि कृतिदेव या किसी अन्य फॉन्ट में हो तो साथ में फॉन्ट भी अवश्य भेजें।
- यदि रचना हस्तलिखित है, तो वह सुस्पष्ट अक्षरों में लिखी होनी चाहिए। ध्यान रखें कि भेजी गई रचना के पृष्ठों का क्रम ठीक हो।
- रचनाएं किसी भी दशा में लौटाई नहीं जाएंगी। अतः उसकी प्रतिलिपि (फोटो कॉपी) अपने पास अवश्य सुरक्षित रखें।
- आलेख की शब्द-सीमा न्यूनतम 1500 तथा अधिकतम 3000 शब्दों की है।
- रचना के साथ लेखक अपना संक्षिप्त परिचय भी प्रेषित करें।
- रचना के साथ विषय से संबंधित चित्र अथवा कहानी के साथ विषय से संबंधित कलाकृतियां (हाई रेज्योलेशन फोटो) अवश्य भेजें।
- रचना भेजने से पहले उसे अच्छी तरह अवश्य पढ़ लें। यदि संस्कृत के श्लोक अथवा उर्दू के शेर आदि उद्धृत किए गए हैं तो वर्तनी को कृपया भली-भांति जांच लें।
- स्वीकृत रचनाएं यथा समय प्रकाशित की जाएंगी।
- रचना के अंत में अपना पूरा पता, फोन नंबर और ई-मेल पता स्पष्ट शब्दों में अवश्य लिखें।
- आप अपने सुझाव व आलोचनाएं कृपया editor-iccr@govcontractor.in पर संपादक को प्रेषित कर सकते हैं।

विकसित भारत और रूस में समृद्ध सांस्कृतिक विरासत

— डॉ. रूबल रानी शर्मा

बहुध्रुवीय वैश्विक व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण भागीदार के रूप में भारत के पास दुनिया को भविष्य मे आने वाली चुनौतियों से निपटने मे सक्षम बनाने के लिए एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है। अपने समग्र रूप में हमारी यही विरासत हमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता के दौर मे भी भावनात्मक बुद्धिमत्ता से दुनिया को संरक्षित करने की दिशा मे पहल करने का अवसर प्रदान करती है। वैश्विक प्रतिस्पर्धा के इस दौर में विश्व के सबसे बड़े देश रूस के साथ भारत का प्राचीन सांस्कृतिक सामंजस्य अंतर्राष्ट्रीय सकारात्मक परिवर्तन की दिशा में एक महत्वपूर्ण उदाहरण पेश करता रहा है। अयोध्या से मॉस्को तक हमारा सांस्कृतिक सौहार्द कूटनीतिक् एकता का मार्ग प्रशस्त करता है जो आने वाले समय मे हमारे संबंधों को और अधिक मजबूती की उम्मीद बँधाता है।

भारत की जीवित योग परंपरा, आध्यात्मिक रुझान, और जियो व जीने दो पर आधारित विदेश नीति रूसी लोगों को जीवन एक उत्सव के रूप में जीने की प्रेरणा देती है। विकास की दिशा के दोनों देशों के संबंधों मे आपसी सौहार्द की संरचना मे भारतीय चिन्तन जिस प्रकार की नीति के तहत् अपना मार्गदर्शन दे रहा है वह दुनिया के किन्ही दूसरे देशों (खास तौर पर चीन, पाकिस्तान) से उम्मीद नहीं की जा सकती है।भारत के लोगों का रहन सहन, खान पान, तीर्थों में बसी हृदयग्राही यात्राएं, रूस मे जीवन से जीवन को जोड़ने की परंपरा का मार्ग प्रशस्त करते हैं। हमारी आँखों के सामने तेजी से बदलते राजनीतिक समीकरण में भी आज भारतीय संस्कृति रूस मे स्वयं को सहेजती नजर आती है आने वाले समय मे "आपके होने से हम है" का ही शंखनाद है । प्रस्तुत लेख मे उपरोक्त विषयों पर आधारित रूस मेभारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के विस्तार की चर्चा है।

भूमिका

हमारी प्राथमिकताओं मे एकता, विचारों मे समन्वय की क्षमता तथा आँखों मे साझे सुनहरे भविष्य का स्वप्न हो तभी किसी प्रभुत्वसंपन्न देश की संस्कृति से एकाकार होने की व्यवहारिकता समझ मे आती है। प्राचीन भारतीय संस्कृति का रूस में विस्तार अधिकतर व्यापार मार्गों से होता रहा, जिससे न केवल दोनों देशों के व्यापार मे प्रगति हुई बल्कि पारस्परिक सांस्कृतिक समझ का आदान-प्रदान भी संभव हो पाया। इन्ही पारस्परिक संबंधों को बढ़ावा देने की दिशा मे वर्षों तक दोनों देश नियमित रूप से जीवन को जीवन से जोड़ने की कला सीखते -सिखाते रहे। प्राचीन भारत की सांस्कृतिक संपन्नता और व्यक्तिगत हुनर का लोहा तो सब मानता ही आया है, व्यापार करने के लिए वस्तु विनिमय की परंपरा में भी दोनों देशों ने अग्रणी भूमिका निभाई थी। राजनीतिक सहयोग की स्थापना से पहले सोवियत-भारत के सांस्कृतिक सदभाव की गहन पृष्ठभूमि रही है।

भारत और सोवियत संघ के बीच सदियों से सांस्कृतिक और आर्थिक संबंध भी रहें हैं, इन दोनों देशों के बीच संबंधों का लक्ष्य एक-दूसरे पर वर्चस्व बनाने के बजाय अपने लोगों के बीच आपसी सद्भावना का प्रतिनिधित्व करना रहा है। ग्यारहवीं और बारहवीं शताब्दी में लैटिन कहानियों के अनुवाद रूसी लेखकों की भारत के प्रति जिज्ञासा के सबसे पुराने रिकॉर्ड हैं। इनमें भारत की समृद्धि और अन्य देशों के साथ उसके संबंधों की कहानियाँ शामिल थीं। पंद्रहवीं

सोवियत संघ के भारत में पहले राजदूत श्री केरिल नोविकोव का आगमन

शताब्दी में अफानसी निकितिन की मौलिक कृति 'जर्नी अक्रॉस द थ्री सीज' भारतीय परिवेश का संपूर्ण विवरण प्रदान करती है। इसके अलावा, सोवियत बिग डिक्शनरी में व्यवसायीग्रेशिम लेबेडेव का उल्लेख है[3] जिन्हें पहले रूसी भारतीय विशेषज्ञ होने का श्रेय दिया जाता है। बौद्ध धर्म का अध्ययन करने के लिए, इवान पावलोविच मिनायेव ने 1874 और 1886 के बीच इस क्षेत्र की यात्राएं भी कीं। इवान मिनायेव, सेर्गेई ओल्डेनबर्ग, फ्योडोर शचरबात्सकोय, यूरी नोरोज़ोव, एलेक्जेंडर कोंद्रतोव, निकिता गुरोव और यूजीन चेलिशेव जैसे प्रमुख रूसी भारतविज्ञानी ने सिंधु लिपि, संस्कृत और भारतीय साहित्य को समझने में अपना शोध योगदान दिया।[4] 17वीं शताब्दी के दौरान, बड़ी संख्या में व्यापारी भारत से इस क्षेत्र की ओर आए, जिनमें से कुछ वोल्गा नदी के किनारे अस्त्रखान क्षेत्र में बस गए। वर्ष 1928 में पंडित नेहरू ने रूस का दौरा किया और अपनी पुस्तक सोवियत रूस में इस क्षेत्र का विस्तृत विवरण लिखा है।[5] 1930 में, रवीन्द्रनाथ टैगोर भी रूस गए और यहाँ के बहुआयामी तत्वों से बहुत प्रभावित हुए। अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ, क्षेत्रीय सीमाएँ और दोनों देशों के द्विपक्षीय हितों ने हमारे संबंधों के विकास को और प्रभावित किया। इस प्रकार भारतऔर पूर्व सोवियत संघ एक-दूसरे के सांस्कृतिक व

> ***भारत और रूस, इन दोनों देशों के बीच संबंधों का लक्ष्य एक-दूसरे पर वर्चस्व बनाने के बजाय अपने लोगों के बीच आपसी सद्भावना का प्रतिनिधित्व करना रहा है।***

रणनीतिक पड़ोसी रहें हैं जिनमे एक-दूसरे के हितों और नीतियों को लेकर आपसी सहयोग और गहरी समझ विकसित हुई।

भारत–रूस संबंधों की सांस्कृतिक अंत:क्रिया

स्वतंत्रता के समय भारत ने सोवियत संघ पर विश्वास जताकर राजनयिक संबंधों की शुरुआत करते हुए एक आधिकारिक घोषणा जारी की थी इस ऐतिहासिक संदर्भ के बावजूद, भारत-सोवियत संबंध 1947 से नई राजनीतिक नींव के आधार पर विकसित हुए हैं। भारत की विदेश नीति के मुख्य सिद्धांतों में से एक रूस के साथ सांस्कृतिक संबंधों के प्रयासों का विकास रहा है। वर्ष 1988 में सोविएत संघ में आयोजित भारत महोत्सव की अभूतपूर्व सफलता के कारण मॉस्को में एक पूर्ण भारतीय सांस्कृतिक केंद्र खोलने का विचार आया था। इसी विचार को मूर्त रूप देने के लिए वर्ष 1989 में जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केंद्र (जेएनसीसी) खोला गया था और तब से इसने रूस में भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।[6] यह केंद्र रूस में भारतीय अध्ययन के एक लंबे इतिहास का गवाह रहा है। भारतीय दूतावास और प्रमुख रूसी प्रतिष्ठानों जैसे इंस्टीट्यूट ऑफ फिलॉसफी (मॉस्को) और मॉस्को में जेएनसीसी के बीच घनिष्ठ सहयोग मौजूद है। प्रमुख विश्वविद्यालयों और स्कूलों सहित कई रूसी संस्थान नियमित रूप से रूसी छात्रों को हिंदी के अलावा तमिल, मराठी, गुजराती, बंगाली, उर्दू, संस्कृत और पाली जैसी

भाषाएं पढ़ाई जाती हैं। रूसी लोगों में भारतीय नृत्य, संगीत, योग और आयुर्वेद में सामान्य रुचि है' जो यहाँ आकर योग, नृत्य, संगीत और हिंदी सीखने मे उनकी मदद करता है।

वर्ष 1991 में सोवियत संघ के स्थान पर जब विश्व पटल पर नए रूस का अभ्युदय हुआ तब इसी दीर्घकालिक और अविस्मरणीय सांस्कृतिक साझेदारी के प्रमाण दिखाई दिए । उल्लेखनीय यह था कि अब भारत और नए रूस के बीच संबंधों के व्यावहारिक पहलू में विज्ञान और प्रौद्योगिकी, व्यापार और व्यवसाय, राजनीतिक, सुरक्षा, रक्षा के साथ-साथ सांस्कृतिक सहयोग में वृद्धि ने पूरी तरह से एक नया आयाम ले लिया। रूस की तरह ही भारत भी आपसी सौहार्दपूर्ण और मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करने पर अडिग था। व्यावहारिक विदेश नीति के अन्तर्गत, जिसका आज दोनों देश अनुसरण कर रहे हैं, विचारधारा या भावनात्मकता को स्थान न देकर आज की जटिल और तेजी से बदलती हुई भू-राजनैतिक स्थिति में, दोनों देशों ने बुद्धिमानी से अपनी विदेश नीति के विकल्पों को विविध कर दिया है। दोनों समय परिक्षणित देशों ने दशकों पुरानी पारस्परिक रूप से लाभप्रद विश्वास पर आधारित साझेदारी को सावधानीपूर्वक बनाए रखा है।

इसी सांस्कृतिक गतिशीलता को बनाए रखने के संदर्भ में वर्ष 1993 को रूसी संघ और भारत गणराज्य की सरकारों के बीच सांस्कृतिक और वैज्ञानिक सहयोग पर समझौता हुआ, साथ ही कानूनी आधार पर संस्कृति, विज्ञान और शिक्षा के क्षेत्र में दोनों देशों की कई एजेंसियों और संगठन भी आगे आए।[9] मॉस्को में भारतीय सांस्कृतिक केंद्र और नई दिल्ली, मुंबई, कलकत्ता, चेन्नई और तिरुवनंतपुरम में रूसी विज्ञान और संस्कृति केंद्र (आरसीएससी) दोनों सांस्कृतिक संबंधों के विकास में प्रमुख योगदान प्रदान कर रहे हैं।

रूस में भारतीय सांस्कृतिक विरासत के विविध आयाम

> **मॉस्को में भारत और रूस ने आधिकारिक तौर इसी दशक में भारतीय संस्कृति वर्ष (2015) और 'नमस्ते रूस' की शुरुआत की। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर) 2015 से ही नियमित तौर पर रूस में इंडोलॉजिस्ट संगोष्ठी आयोजित करता आया है। सेंट पीटर्सबर्ग स्टेट यूनिवर्सिटी और आईसीसीआर के संयुक्त प्रायोजन के तहत वर्ष 2018 में दोनों देशों के बीच आपसी संपर्कों के इतिहास को याद किया गया। संस्थागत स्तर पर इस प्रकार हमारी सांस्कृतिक पहल बेहद दिलचस्प हैं।**

वर्ष 2000 में ...
जब "भारत-रूस ...
पर घोषणा" पर हस्ता...
रूस भारत को और ...
ले रहा है। रूस अपने ...
भारत को प्रत्यक्ष व परोक्ष ...
प्राथमिकताओं मे रखता है ...
भी रूस को अधिक महत्व ...
प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से ...
संस्कृति के साथ साथ सुरक्षा ...
द्विपक्षीय संबंधों को सहज ...
है। रूस और भारत के बीच ...
आदान-प्रदान का जीवन्त ...
हमारे इन अंतर-सांस्कृतिक ...
दृष्टिगोचर होता है जिनमे ...
संगीत, फिल्म महोत्सव, ...
कला प्रदर्शनियाँ, और ...
आयोजित विभिन्न विषयों ...
और सम्मेलन है। उदाहरण ...
2012 में हेज ऑफ मॉस्को ...
आयोजित किया गया था। ...
ऑफ इंडिया माइलीया ...
में और हेज ऑफ मुंबई ...
में आयोजित किया गया ...
मॉस्को में भारतीय ...
अन्तरिक्ष क्षेत्र में भारतीय ...
आयोजित होते रहे हैं ...
सिनेमैटोग्राफी के क्षेत्र में ...
महाराष्ट्र मे कई रूसी फिल्मों ...
की। रूसी फिल्म उद्योग ...
अक्सर भारतीय फिल्म ...
लेते हैं, विशेष रूप से मॉस्को ...
फिल्म महोत्सव और ...
में भारतीय अंतर्राष्ट्रीय ...

मैक्सिम गोर्की के साथ रवीन्द्र नाथ ठाकुर

जीवन्त साक्ष्य बने।

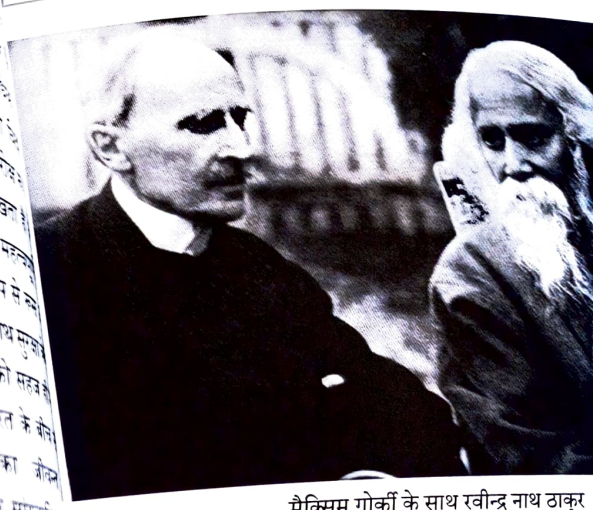

मॉस्को में भारत और रूस ने आधिकारिक तौर इसी दशक में भारतीय संस्कृति वर्ष (2015) और 'नमस्ते रूस' की शुरुआत की।[10]। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर) 2015 से ही नियमित तौर पर रूस में इंडोलॉजिस्ट संगोष्ठी आयोजित करता आया है। सेंट पीटर्सबर्ग स्टेट यूनिवर्सिटी और आईसीसीआर के संयुक्त प्रायोजन के तहत वर्ष 2018 में दोनों देशों के बीच आपसी संपर्कों के इतिहास को याद किया गया।[11] संस्थागत स्तर पर इस प्रकार हमारी सांस्कृतिक पहल बेहद दिलचस्प हैं। अहिंसा तथा सत्य के आदर्शों पर चलने वाला भारत एक ही समय में सुरक्षा और संस्कृति दोनों को रूस मे जिस तरह सहेजता नजर आता है वह समस्त विश्व के लिए एक अतुलनीय उदाहरण पेश करता है।

अंतर्राष्ट्रीय मि...
सामंजस्य का ...
भारतीय ...
पसंद के साथ ...
के बीच अत्य...
मॉस्को 20...
मसाले औ...
अन्य भार...
बहुत मां...
75वें स...
मिलेट ...
किए ...
सहयो...
भार...
वि...
ना...
अ...

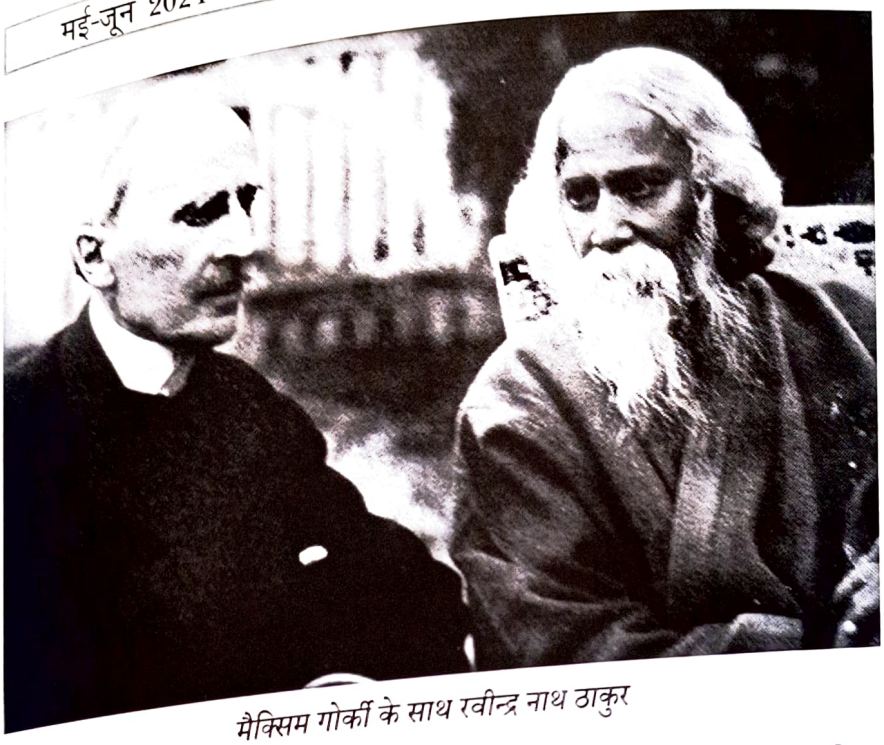

मैक्सिम गोर्की के साथ रवीन्द्र नाथ ठाकुर

जीवन्त साक्ष्य बने।

मॉस्को में भारत और रूस ने आधिकारिक तौर इसी दशक में भारतीय संस्कृति वर्ष (2015) और 'नमस्ते रूस' की शुरुआत की।[10]। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर) 2015 से ही नियमित तौर पर रूस में इंडोलॉजिस्ट संगोष्ठी आयोजित करता आया है। सेंट पीटर्सबर्ग स्टेट यूनिवर्सिटी और आईसीसीआर के संयुक्त प्रायोजन के तहत वर्ष 2018 में दोनों देशों के बीच आपसी संपर्कों के इतिहास को याद किया गया।[11] संस्थागत स्तर पर इस प्रकार हमारी सांस्कृतिक पहल बेहद दिलचस्प हैं। अहिंसा तथा सत्य के आदर्शों पर चलने वाला भारत एक ही समय में सुरक्षा और संस्कृति दोनों को रूस मे जिस तरह सहेजता नजर आता है वह समस्त विश्व के लिए एक अतुलनीय उदाहरण पेश करता है।

अंतर्राष्ट्रीय मिलेट वर्ष : सांस्कृतिक सामंजस्य का अनूठा प्रयोग

भारतीय व्यंजन रूस की स्थानीय पसंद के साथ-साथ देश की बड़ी आबादी के बीच अत्यधिक लोकप्रिय हैं। वर्ल्ड फूड मॉस्को 2023 में शहद, अचार, चटनी, मसाले और जैविक सामान के साथ-साथ अन्य भारतीय प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों की बहुत मांग रही है।संयुक्त राष्ट्र महासभा के 75वें सत्र में मार्च 2023 को अंतर्राष्ट्रीय मिलेट वर्ष (आईवाईएम 2023) घोषित किए जाने के बाद भारत–रूस कृषि सहयोग मे और बढ़ोतरी हुई है। चूंकि भारत समग्र रूप से बाजरा उत्पादन में विश्व में अग्रणी है, इसके बाद नाइजीरिया, नाइजर और चीन हैं।[12] मॉस्को चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (एमसीसीआई) तथा रूस में एफएओ कार्यालय का भारत की मिलेट परियोजना को लेकर निरन्तर सकारात्मक समर्थन प्राप्त हो रहा है।[13] बाजरा और विभिन्न भारतीय खाद्य उत्पाद 'वर्ल्ड फूड मॉस्को' में प्रमुखता से प्रदर्शित किए गए[14] इस प्रकार भारतीय पाक वस्तुओं से संबंधित संयुक्त उद्यमों और रणनीतिक सहयोग के लिए विगत वर्ष ढेर सारे अवसर लेकर आया है। भारत द्वारा बाजरा उगाने की तकनीक का यथासंभव प्रसार करने के लिए हमारी वैश्विक कार्य योजना में रूस का शामिल होना सांस्कृतिक सहयोग के सततः साथ व्यापारिक उन्नति का भी सकारात्मक संकेत है। बाजरा बाजार के 2020 में $9.95 बिलियन के मूल्यांकन से 4.49 प्रतिशत की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दरसे बढ़कर 2028 में $14.14 बिलियन होने की उम्मीद है।[15]

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस व स्वास्थ्य की संस्कृति

शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक कल्याण के लिए समग्र दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करने वाले स्वास्थ्य कार्यक्रमों का आयोजन स्वास्थ्य की संस्कृति के प्रमुख कर्तव्य है। इस विचार में यह महसूस करना भी शामिल है कि स्वस्थ जीवन जीने के लिए स्वास्थ्य कितना महत्वपूर्ण है। सोवियत संघके विघटन के समय भारतकी इसी योग परंपरा को तेजी से आत्मसात किया गया। नवीन अस्तित्व मे आए रूस में दिनों दिन योग संस्कृति ने काफी लोकप्रियता हासिल की। अपने रूस दौरे के दौरान, बीकेएस अयंगर ने स्टूडियो योग नेटवर्क की स्थापना में सहायता की।[16] बाद के वर्षों में, योग का विस्तार

हुआ और पूरे देश में स्टूडियो में कई रूपों में योग उपलब्ध हुआ तथा संयुक्त राष्ट्र की अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस उद्घोषणा के बाद से रूस में योग संस्कृति का विस्तार हो रहा है।

विक्टर सर्गेयेविच बॉयको ने 1993 में मास्को में रूस में पहला योग विद्यालय स्थापित किया और तब से पूरे देश में इसकी शाखाएँ हो गई। जैसे-जैसे योग की लोकप्रियता बढ़ती गई, प्रधान मंत्री दिमित्री मेदवेदेव ने 2007 में कहा कि वह "धीरे-धीरे योग में महारत हासिल कर रहे हैं"।[17] 2010 में रूस के योग सप्ताह समारोह के दौरान, भारतीय आध्यात्मिक गुरु श्री श्री रविशंकर ने रूस की यात्रा की, मॉस्को, सेंट पीटर्सबर्ग, कजान, इरकुत्स्क, सोची और ट्यूमेन में खोले गए आश्रम में लोगों को योग की भारतीय परंपराओं से अवगत किया।[18]

इन्हीं सामूहिक प्रयासों से रूस और भारत दोनों ने सभी मोर्चों पर शांति, संस्कृति और सुरक्षा बनाए रखने के लिए पहल की है, और यह महत्वपूर्ण है कि ये देश इस तरह से वैश्विक बुनियादी ढांचे का निर्माण कर रहें है जो विश्व के सभी लोगों और उनकी सभ्यताओं की विविधता का सम्मान करे, ताकि इसी तरह मानवता की एकता की ताकत समझी जा सके। रूसी साहित्य, समाज और संस्कृति में भारतीयता की रंगत और मन मोह लेने वाले भारत- रूसी संवाद मंच कृत्रिम बुद्धिमत्ता के समय में भी विश्व का ध्यान आकर्षित कर रहें हैं। इन्हीं सार्थक संवादों का असर है कि वर्ष 2022 मे जब यूक्रेन पर हमले के बाद रूस की परमाणु हथियारों को उपयोग करने की योजना तैयार थी तब अमेरिका ने चीन और भारत से परमाणु हमले की चिंता के कारण सहायता मांगी थी। भारत ने रूस से अपने मूल प्रस्ताव को संशोधित करने का आग्रह किया। भारत के आग्रह के कारण यूक्रेन में परमाणु हमला टल गया। इसी प्रकार संयुक्त राष्ट्र, ब्रिक्स, शंघाई सहयोग संगठन जैसे अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भविष्य के लिए साझे विशाल लक्ष्य संजोये तथा वैश्विक कल्याण के केंद्र की छवि में रूस तथा भारत निज हित के स्थान पर मानवता को प्राथमिकता देते हैं।

संदर्भ

1. गुटमेयर, डोमिनिक (2017)। बॉर्डरलैंड्स ओरिएंटलिज्म या हाउ द सेवेज ने अपना बड़प्पन खो दिया: 1817 और 1878 के बीच काकेशस की रूसी धारणा। वियेन. पी। 67. आईएसबीएन 9783643507884.
2. https://web.archive.org/web/20140127034218/http://hindi.ruvr.ru/2013_12_27/Nikitin-rahasyamayi-pathik/
3. https://www.rbth.com/blogs/2014/04/12/st_petersburgs_illustrious_sanskrit_connections_34481
4. https://iccr.gov.in/indianculturalcenter/jawaharlal-nehru-cultural-center-moscow-russia.
5. NehruJL, Soviet Russia: Some Random Sketches and Impressions, December 1928, Allahabad Law Journal Press, Allahabad.
6. https://iccr.gov.in/indianculturalcenter/jawaharlal-nehru-cultural-cen... russia
7. https://www... arts/2013/08/10/... old_passion_for_... html
8. https://india.m... countries/bilateral... cultural_ties/
9. https://india.m... countries/bilateral... cultural_ties/
10. https://www.cgivlad... page/india-russia-relat...
11. https://www.vifindia.org... hindi/2018/june/08/... paschat-bharat-rusi-san... ke-judaw-ki-khoj
12. https://www.fao.org... federation/news/detail... en/c/1650342/
13. वही.
14. https://www.euro... distribution.com/even... food-moscow-2023/
15. https://www.indian... com/world-news/sup... indian-millets-ready-to... moscow-food-fest-151...
16. https://www.rbt... arts/2014/08/20/bks_... was_the_pioneer_of... revival_in_russia_3769...
17. Barashev, Roman (... 2007). "Yoga in Russi... Novosti.
18. Kishkovsky, Sophia. "... Embrace Yoga, if They... Money". The New Yor...

(एसोसिएट प्रोफेसर, ...
विज्ञान विभाग, माता सुंद...